BA-H
मैथिली
परीक्षार्थीक

Lecture - I

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक) G/T
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

जीवनझाक नाटकीय कृतित्व :-

जीवनझा वर्तमान मैथिली नाटकक तोरणद्वार पर लिखबा लेल योग्य प्रेरित भेलाह तथा शिल्प एवं शैली दुनू दृष्टिसँ ओहिमे परिवर्तनक आरोपण कएलनि। ई अपन नाटकमे मैथिलीक संग संस्कृत एवं प्राकृतकेँ मिश्रित करबाक परम्परागत विधानकेँ हटाकऽ सरल गद्यक प्रयोग कएलनि।

जीवनझा, जनिक यथार्थ नाम जीवनाथ झा छलनि, हरिपुरवा (समस्तीपुर जिलाक) ग्रामक यजुर्वेदी कुलक ब्राह्मण वनमाली झा प्रसिद्ध धोधाई झाक बालक छलाह। हिनक जन्म 1848 ई०मे भेल छलनि। ई काशी राज प्रभुनारायण सिंहक दानाध्यक्ष पदपर प्रतिष्ठित छलाह। हिनक मृत्यु काशीपुरीमे वैशाख शुक्ल सप्तमी मंगलकेँ 1912 ई० मे भेलनि। कवि

कवि जीवनझाक नाटककारक अतिरिक्त हिनक कवि-व्यक्तित्व सेहो प्रभावकारी अछि। ई अपन समयक प्रसिद्ध कवि छलाह। ई यद्यपि कविताक सेहो नाटक जकाँ क्रान्ति नहि अनलनि, किन्तु कवितामे अनेक प्रयोग कऽ ओहिमे विलक्षण चमत्कार अवश्य उत्पन्न कऽ देलनि। नाटकक बीच-बीचमे हिनक गीत विशेषतया

शृंगार-परक आछि। भक्ति-परक रचना सेहो हिनका उपलब्ध अछि। जीवनझा रचनावली क अन्तमे हिनक पाँच गोट स्फुट गीत देल गेल अछि।

पूर्वमे ई मैथिलीक परम्परागत पद्यकार छलाह, किन्तु नाटककारक रूपमे सभसँ अधिक प्रसिद्ध भेलाह। हिनक चारिगोट नाटक अछि— सुन्दर-संयोग (1904), नर्मदा-सागर सट्टक (1906), मैथिली सट्टक (पुस्तकाकार प्रकाशित नहि, मिथिला मोद तथा मैथिली हित साधनमे 1906 ई०मे क्रमशः प्रकाशित), तथा सामवती पुनर्जन्म (1908)। सम्प्रति 1980मे मैथिली अकादमी पटना द्वारा श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर आ डा० रामदेव झाक सम्पादनमे जीवनझाक रचनावली प्रकाशित भेल अछि जाहिमे हिनक समस्त उपलब्ध कृतिक संकलित। हिनक व्यक्तित्व-कृतित्वक विवरण/ओत, एक दीर्घ भूमिका सेहो देल गेल अछि।

Samyat Kumar
11/09/20

Scanned by TapScanner